देवगढबारिया राज्य का सांस्कृतिक योगदान – शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में (सन् १८०३ से सन् १९४७ पर्यन्त) समालोचना

डॉ. राजेश कोठारी
आसिस्टंट प्रोफ़ेसर,
सरकारी विनयं कॉलेज, गांधीनगर
गुजरात (भारत)

१. प्रास्ताविक

भारत में ब्रिटीश शासन काल में दो प्रकार की शासन व्यवस्था थी। (१) ब्रिटीश हकुमत अधिन प्रदेश (२) स्वतंत्र देशी रियासते। देशी रियासते की संख्या ५६२ थी। भारत के ४० प्रतिशत विस्तार में देशी रियासतो का एकाधिकार था। सामान्यतया देशी रियासते की शासकीय व्यवस्था, शासन शैली, कार्यप्रणाली, न्यायप्रणाली, भिन्न भिन्न प्रकार की एवं विलक्षण थी। कुछ विषमता के साथ सादृश्य यह था की देशी रियासते की प्रजा ब्रिटीश ताज की प्रजा के रुप में नहीं माना जाता।[१] सुरत, भरुच, अहमदाबाद, खेडा, एवं पंचमहाल इन पांच जिलो में कंपनी का शासन था। तदतिरिक्त प्रदेशो में हिंदु व मुसलिम शासक थे। कर्नल कीटींगने १८६३ में देशी रियासतो का निरीक्षण, नियमन हेतु सात विभागो में विभक्त किया।[२] गुजरात में देशी रियासतो में सबसे बडा देशी राज्य बडोदा था। बडोदा मे गायकवाड का शासन था। उनका राजकीय संबंध वाईसरोय से था। बाकी देशी राज्यो का संबंध मुंबई के गवर्नर के साथ था। उनके राज्य प्रबंधन हेतु प्रतिनिधि नियुक्त किये गये। कुल १० विभिन्न स्थान कच्छ, पालनपुर, काठीयावाड, खंभात, रेवातट प्रदेश, महीतटप्रदेश, नारुकोट, धरमपुर, वांसदा, एवं सचीन में प्रतिनिधि भेजे गए[३] देशी राज्य ब्रिटिश सरकार की मान्यता और शरतो के आधीन सुरक्षाबल रख पाते। राजा व राज्य की महत्ता अनुरुप तोपो से सन्मान दीया जाता। देवगढबारिया रेवा तट प्रदेश प्रतिनिधि अंतर्गत आता था। देवगढ की द्वितियश्रेणी में गणना होती थी।[४] रेवातटवर्ती प्रदेश का नियमन संचालन पंचमहाल के पश्चिमीक्षेत्र गोधरा, कालोल, हालोल तथा पंचमहाल का पूर्वीय क्षेत्र देवगढबारिया संतरामपुर आदि प्रमुख थे।

कालान्तर में सन् १९४१ में देशी राज्यो का व्यवस्थापन 'गुजरात स्टेट्स एजन्सी' को दीया गया। रेवातटप्रदेश एवं सुरत प्रदेश को 'गुजरात स्टेट्स एजन्सी' की संज्ञा दी गई। तत् पच्चाद् सन् १९४३ में सब

एजन्सी विसर्जित कर केवल दो एजन्सी बनाई (१) भारत के पश्चिम राज्य प्रतिनिधि तथा (२) बडोदा एवं गुजरात राज्य एजन्सी । अन्ततोगत्या ०५/११/ १९४४ को केवल एक एजन्सी बडोदा को स्वीकृति दी । बडोदा एजन्सी के आधीन पश्चिम भारत के विभिन्न राज्य एवं गुजरात का नियमन देखा जाता था (५) देवगढबारिया आजादी पूर्व प्रतिष्ठित देशी राज्य के रुप में था । वर्तमान में दाहोद जिले में एक तहसिल है । सन् १९९१ की जनगणना अनुसार देवगढबारिया के ग्रामीण क्षेत्र की जनसंख्या ३४०७९९ एवं शहेरी क्षेत्र की जनसंख्या १७६०२ हैं । (६)

२. देवगढबारिया राज्य इति वृत्त

जनश्रुति एवं क्विदन्ति अनुसार देवगढबारिया का चौहान पृथ्वीराज चौहान के वंशज थे । पावागढ क्षेत्र के चौहान वंश से भी इतिहास जुडा जाता है । सन् १२४४ से सन् १४८४ पर्यन्त पावागढ में शासन कीया । सन् १४८४ में महंमद बेगडा ने पावागढ–चांपानेर दो गढ जीतकर चौहान शासको को राज्य से दूर किया । निष्कासित पृथ्वीराजने छोटाउदेपुर एवं डुंगरजी ने बारिया नगर बनाया । (७) डुंगरजीने चंपानेर के भील (किरातो) को हराकर १५वी शताब्दी में पर्वतीयप्रदेश में नगर की संस्थापना की जिसे 'देवगढबारीया' के रुप में जाना जाता था । डुंगरजी के वंशज मानसींग के मृत्यु के पश्चात् उनकी रानी एवं नाबालिक राजकुमार पृथ्वीराज के समय कोई शख्सने नाबालिक राजकुमार पृथ्वीराज को डुंगरपुर के रावळ कुटुंबने बारह साल पर्यन्त आश्रय दीया । सन् १७८२ में पृथ्वीराज ने देवगढबारिया को जीत लिया । प्रारंभ से देवगढबारिया स्व अस्तित्व एवं स्वतंत्रता हेतु अनवरत संघर्ष में रहा । वह कदापि मुघल व मराठा के आधीन नहीं रहा ।

३. देवगढबारिया राज्य का ब्रिटिश सरकार से संबंध

देवगढबारियाने प्रदेश हित के लिए ब्रिटीश कंपनी के साथ अच्छे संबंध बनाये । कंपनी ने भी राज्य की भौगोलिक उपयुक्तता से परस्पर अच्छे सम्बन्ध बनाये । पृथ्वीराज के वंशज जशवंतसिंहने सन् १८०३ में कर्नल मूरे और दोलतराव के बीच युद्ध में मूरे की मदद की । राजपीपला के कंपनी प्रतिनिधि मि.जे.पी.विलोबीने २३ साल बाद निम्नलिखित नोंध लिखी 'नर्मदा के उत्तर भाग में भील (किरात) शासको का नेतृत्व करनेवाला बारीया राजाने हमारे प्रति सद्व्यवहार, मैत्रीपूर्ण व्यवहार एवं सहानुभूति प्रदर्शित की अतः युद्ध मे जीत निश्चित हुई' यह नोंध दोनो पक्षो का परस्पर सम्बन्ध की परिचायक है ।

कर्नल मूरे ने नोंध लिखी बारिया राजा के प्रदेश में से विचरण करते वक्त मेजर होम्स का अत्यन्त मनोनुकूल मित्राचार किया गया जिससे प्रभावित होकर मेजर होम्स भूरि प्रशंसा करता है । तत्पश्चाद् कर्नल ने प्रस्ताव किया की झालोद का प्रदेश एवं सिन्धिया का प्रदेश बारिया को दीया जाय । गंगादास के समय

राज्य मे अस्थिरता आ गयी तब पृथ्वीराज को पुनः अंग्रेजोने सत्ता सोंप दी । सन् १८६४ मे पृथ्वीराज के अवसान के बाद उनका पुत्र नव साल का था अतः राज्य का शासन मुंबई सरकार ने चलाया । मानसिंह की आयु २१ साल होने पर सन् १८७६ में शासन की धुरा संभाली । भारत में प्रिन्स ओफ वोल्स के आगमन समय मानसिंह दिल्ही गये । सन १९०८ में जब मानसिंह का देहान्त हुआ तब उनके पुत्र रणजितसिंह ने राज्य व्यवस्था सुज्ञ दिवान हरिलाल पारेख के उत्कृष्ठ मार्गदर्शन से चलाई । प्रथम विश्वयुद्ध दौरान स्वयं फ्रांस के युद्ध मेदान में गये । ब्रिटीश सैन्य बलमें केप्टन का पद लिया । कंपनीने भी सलामी में नव तोप से बढाकर ग्यारह पोत की वृद्धि की । देवगढबारिया के पास ३ तोप २४ घुडसवार, २११ पायदल का सैन्यबल था । रणजीतसिंह की शिक्षा राजकोट की प्रसिद्ध राजकुमार कॉलेज में हुई । बाद में ईग्लेन्ड में शिक्षा प्राप्त की । देवगढबारिया के सुव्यवस्थापन, सांस्कृतिक धरोहर निर्माण में रणजीतसिंह की उच्च शिक्षा की असर दिखाई देती है । उन्होने शिक्षा, आरोग्य, जमीन, जंगल, याता-यात, रमत-गमत संकुल, नशाबंधी, मकान सहाय, शिक्षा निधि, दुष्काल निधि, आपत्ति व्यवस्थापन, बेंकिंग, गौहत्या प्रतिबंध, लग्न, लग्न - विच्छेद, व्यापार, संदेशव्यवहार इत्यादि क्षेत्रो में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में अपना मूल्यवान योगदान दीया । 'देवगढबारिया राज्य का सांस्कृतिक इतिहास' विषयक उक्त लेख में केवल शिक्षा नीति एवं शिक्षा व्यवस्था की समालोचना का उपक्रम कीया है ।

४. देवगढबारीया में शिक्षा व्यवस्था

भारत में अंग्रेजो के आगमन पूर्व पंडित व गुरुजनो तथा मौलवी द्वारा शिक्षा संस्थान चलाये जाते । सामान्यतया यह शाला ग्राम्यस्तर पर छोटे छोटे स्तरो पर थी । शिक्षक व गुरुजनो के नाम से जानी जाती थी जैसे की 'पंड्या शाला' 'धूली की शाला' इत्यादिमूंबई गवर्नर काउन्सील सदस्य जे.एल.पेन्डर गास्ट महोदयने सन १८२१ में लिखा की ' मुंबई राज्य में छोटे गॉव और बडे गॉव में प्राचीन प्रद्धति से शिक्षा देने की परंपरा थी' । गुजरात में शिक्षा का संचालन- व्यवस्था अंग्रेज सरकार हस्तक थी । बाद में देशी राज्यो ने अपने हस्तक रखी । राजकोट की प्रसिद्ध राजकुमार कॉलेज में शिक्षा दीक्षा पाकर आये राजकुमारो ने अपने राज्यो में शिक्षा के प्रचार-प्रसार को महत्व दीया । राजा मानसिंह एवं रणजितसिंह के विशिष्ट प्रयासो से शिक्षा सुविधा का स्तर उत्कृष्ट बने ।

(१) प्राथमिक शिक्षा

सन् १८७६ में राजा मानसिंहने गुजराती प्राथमिक शाला व कृषि विद्यालयो की स्थापना कर संचालन - व्यवस्थापन- तज्जज्ञ कृषिकारो के हाथ में सौंप दी । सन् १९०५ में अंग्रेजी माध्यम की विद्यालय बनाई गई । सन् १९२२ में १५ प्राथमिक विद्यालय एवं १ माध्यमिक विद्यालय शुरु की [१४] सन् १९३५ में ६ नई प्राथमिक विद्यालय के साथे ६३ विद्यालय बन गई । [१५] राज्य के मुख्य शहर हवेली में कन्या विद्यालय

बनाई । तदुपरांत परोली, घोघंबा, मीरप, दूधिया, पीपोलद आदि १३ स्थानो पर गुजराती विद्यालय कार्यरत थी ।[१६] राज्य में प्राथमिक - माध्यमिक शिक्षा नि:शुल्क दी जाती थी ।[१७] सन् १९२६-२७ में सरकार ने मध्यादेश जारी कर प्रथम व द्वितिय स्तर के राज्यो में शैक्षणिक संस्थाओ के निरीक्षण हेतु निरीक्षको की नियुक्तिया की ।[१८] रणजीतसिंह माध्यमिक विद्यालय के आचार्य जी.एल. पंडया को गुजराती प्राथमिक विद्यालय के निरीक्षण का दायित्व दीया गया ।[१९] विद्यालयो में परंपरागत पद्धति से शिक्षा दी जाती थी । साथ में कौशल्यो को उजागर करने हेतु 'हस्तकला' का प्रावधान था । कृषि मे नवीन दृष्टिकोण विकसित करने हेतु एवं हस्तकला से छात्रो का समुचित विकास करने का उपक्रम कीया जाता था ।[२०] सन १९२८-१९२९ में प्राथमिक विद्यालयो में छात्र संख्या ८८७ थी । जिस में छात्रओ की संख्या १६० थी ।[२१] विद्यालयो की संख्या २१ थी सन् १९२९-३० में छात्राओ की संख्यामें वृद्धि हुई । सामान्यतया प्राथमिक विद्यालय सात कक्षा पर्यन्त थी । वर्नाक्युलर फाईनल की परीक्षा प्रादेशिक भाषा में आयोजित होती थी ।[२२] राज्य के महालयो में हवेली, राजगढ, सागटला, धानपुर, उमरिया, दूधिया, रणधिककपुर में कुल विद्यालयो की संख्या ७७ थी । सन् १९४२ -४३ में कुल छात्र संख्या ३१३५ थी ।[२३] सन् १९४३ में मुख्य मथक देवगढबारिया में छात्र छात्राओ की भिन्न भिन्न विद्यालय था । जिन में छात्र संख्या ४८७ एवं छात्राओं की संख्या ३९२ थी । सन् १९४२-४३ में रतनमहाल में दो नई शाला बनाई गई । अब राज्य में कुल प्राथमिक विद्यालयो की संख्या ७९ हो गई ।[२४] रणजितसिंह ने १९०८ में अध्यादेश प्रसिद्ध कर गुजराती व अंग्रेजी विद्यालयो में शिक्षा शुल्क हटा दीया ।[२५]

(२) माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था

देवगढबारिया राज्य ने प्राथमिक शिक्षा के साथ माध्यमिक शिक्षा के विकास हेतु रणजितसिंहने माध्यमिक विद्यालय शुरु कीया । सन् १९२७ में लेडी. ईरवीन की उपस्थिति में शिलान्यास करवाया ।[२६] इस कार्यक्रम में आसपास के राज्य के राजवी परिवार - ठाकुर परिवार एवं ब्रिटीश अधिकारी की गरीमामयी उपस्थिति में सम्पन्न किया ।[२७] नवनिर्मित विद्यासंकुल के उद्घाटन कार्यक्रम त्रिपुरा राज्य के राजा द्वारा किया गया ।[२८] सन् १९२६-२७ दौरान छात्रो की संख्या १५७ थी ।[२९] लगभग पांच साल दौरान छात्र संख्या में २३ प्रतिशत वृद्धि हुई ।[३०] माध्यमिक शिक्षा में हस्तकला का भी विनियोग किया गया अत: छात्राओं की संख्या में वृद्धि हई ।

(३) कन्या शिक्षण

देवगढबारिया में कन्या शिक्षण हेतु महाराणी कन्या विद्यालय शुरु की गई । छात्राओ को भी वर्नाक्युलर परीक्षा देनी पडती थी । सन १९३९ में ३३१ छात्राओ ने शिक्षा प्राप्त की । छ कन्याओने वर्नाकयुलर परीक्षा दी । सब कन्या उतीर्ण होने पर १०० प्रतिशत परिणाम आया । सन १९४२ में ३७० कन्याओने शिक्षा प्राप्त की । वर्नाक्युलर परीक्षा १५ कन्याओ ने दी जिस में ७ कन्या उत्तिर्ण हुई [३१] सन् १९४३ में ३८६ में कन्याओने शिक्षा प्राप्त की ८ में से ७ कन्याओने वर्नाक्युलर परीक्षा उत्तीर्ण की [३२]

(४) कृषि व्यवस्थापन का नूतन अभ्यासक्रम :

छात्र केवल पुस्तक तक सीमित न रहे अपितु कृषिक्षेत्र मे तज्जज्ञ बने तदहेतु राज्य में कृषि शिक्षा का नूतन अभ्यासक्रम रचा गया । छात्र आवासकी व्यवस्था खडी की । [३३] सन् १९३७-३८ दौरान छात्र आवास में ४८ छात्रो ने निवास कर तालिम प्राप्त की [३४] छात्रावास में स्वास्थ्य सम्बन्धी एवं प्रगति अहेवाल त्वरित प्रेषित करना पडता था । [३५] यह कोलेज का अभ्यासक्रम 'अेग्रीकल्चर कम्युनीटी' चलाती थी । छात्रो को निवास, भोजन, कपडा, शिष्यवृत्ति दी जाती थी ।

(५) शिष्यवृत्ति योजना

राज्य में शिक्षा उत्कर्ष हेतु नि:शुल्क शिक्षा के साथ साथ उच्च शिक्षा हेतु शिष्यवृत्ति दी जाती थी । [३६] तबीबी अभ्यास हेतु राज्य द्वारा संपूर्ण मदद दी जाती थी । [३७] सन् १९२९-३० साल में रु.१०१० शिष्यवृत्ति दी गई । [३८] सन् १९३१ - ३२ वर्ष में रु.७८० शिष्यवृत्ति दी गई । प्रतिवर्ष ५ प्रतिशत वृद्धि की जाती थी । [३९] राज्य में छात्रो को शिष्यवृत्ति एवं ऋण भी दीया जाता था । [४०] कोलेज शिक्षा हेतु मासिक एवं वार्षिक शिष्यवृत्ति दी जाती थी । श्री पी.अेम.परीख को रु.५००/- की शिष्यवृत्ति दी गई । [४३]

(६) पुस्तकालय व्यवस्था

गुजरात राज्य में तीन हजार गॉव में पुस्तकालय की अनुदान पद्धति से पुस्तकालय सेवाये उपलब्ध थी । [४४] सन १९११ मे महाराजा मानसिंहने देवगढबारिया में पुस्तकालय शुरु कीया था । प्रस्तुत पुस्तकालय महाराजा मानसिंह पुस्तकालय नाम से जाना जाता था । [४५] सन् १९४१-४२ मे ४ दैनिक समाचार पत्र, १० साप्ताहिक सामयिक, १७ मासिक सामयिक आते थे । [४६] देवगढबारिया टाउनहोल में मुक्त पुस्तकालय सेवा शुरु की गई । सन् १९४२-४३ मे ५ दैनिक समाचारपत्र ५ साप्ताहिक, ६ मासिक सामयिक आते थे । वाचक लाभान्वित होते थे । [४७] सन् १९४२-४३ मे सर रणजितसिंह हाईस्कुल के छात्रो के लिए विशेष

व्यवस्था बनाई गई । ५४ छात्रो को ६४० पुस्तके दी गई । जिनका मूल्य रु ६१५ के करीब था । दूसरे वर्ष ६१ पुस्तके दी गई । जिनका मूल्य रु ६९४ था ।[४८]

(७) शिक्षा कोष निधि

राज्य विद्यालय केन्द्रियकरण हेतु ०१/११/१९१७ से मुंबई सरकार हस्तक राज्य की विद्यालयो का व्यवस्थापन सोंपा गया । जिसे शिक्षा का प्रचार प्रसार व विद्यासंकुलो का सुचारु व्यवस्थापन कीया जा शके । अत: शिक्षा कोष का विधान कीया गया । रु ५०,००१ शिक्षाकोष निधि में रखा गया ।[४९]

५. उपसंहार

उक्त संशोधनपत्र मे रेवा तटप्रदेश देवगढबारिया राज्य में सांस्कृतिक इतिहास मे शिक्षा की समालोचना व विमर्श कीया गया । शिक्षा नीति व शिक्षा व्यवस्थापन द्वारा राज्य का समुत्कर्ष एवं बुनियादी ढांचे का निर्माण होता है । देवगढबारिया के शासकोने शिक्षा का विकास विस्तार प्रचार प्रसार कर राज्य को सुख शांति व समृद्धिमय बनाया था । उक्त संशोधन पत्र में देवगढबारिया का इतिहास देवगढबारिया राज्य का ब्रिटीश सरकार से संबंध, देवगढबारिया की प्राथमिक – माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था, कन्या शिक्षा, कृषि व्यवस्था का नूतन अभ्यासक्रम, शिष्यवृत्ति योजना, पुस्तकालय व्यवस्था इत्यादि का विमर्श कीया गया है ।

पाद टीप

१) धीरुभाई ठाकर (संपा.)गुजराती विश्वकोश, खंड – ९ अमदावाद, १९९७ पृ.४१०.
२) शिवप्रसाद राजगोर, गुजरातनो राजकीय अने सांस्कृतिक ईतिहास, अमदावाद पृ ११७.
३) गोविंदभाई हाथीभाई देसाई, गुजरातनो अर्वाचिन ईतिहास, अमदावाद १८९८ पृ ३८८.
४) ह.ग.शास्त्री, गुजरातनो राजकीय अने सांस्कृतिक ईतिहास, भाग – ८, अमदावाद पृ १२०–२१.
५) नीरा देसाई, गुजरातमां ओगणीसमी सदीमा सामाजिक परिवर्तन, अमदावाद, २०१२– पृ.८३–८५.
६) धीरुभाई ठाकर (संपा.) पूर्वोक्त पृ.३९०– ३९१.
७) लाधाभाई हरजी परमार, रेवाकांठा डीरेकटरी, भाग– २ राजकोट, १९२२ पृ.२९.
८) ठाकर,पूर्वोक्त पृ.३९०.
९) परमार, पूर्वोक्त, पृ. ३३.
१०) अेजन.
११) अेजन पृ.३५.

१२) अेजन.

१३) शिवप्रसाद राजगोर, केळवणीनो ईतिहास, अमदावाद, १९६६, पृ.३४.

१४) अरुण वाघेला, ईतिहास दर्पण, वडोदरा, २००६, पृ.११६.

१५) Motilal Parekh,Reports on the Administration of the Baria state,Printing Press Devgadhbaria,1935-36,P-34.

१६) कालीदास देवशंकर पंडया, गुजरात ,राजस्थान, अमदावाद, १८८४, पृ.१७८.

१७) Motilal Parekh,Reports on the Administration of the Baria state, Ahmedabad,1931-32,p-39.

१८) Ibid., 1927-28,p-32.

१९) Ibid., 1927-28,p-39.

२०) Ibid., 1941-42,p-39.

२१) Ibid., 1929-30,P23.

२२) Ibid., 1941-42,p-39.

२३) Ibid., Devgadhbaria, 1941-42,P-40-41 & 42-43, p-41.

२४) Ibid., Bombay,1943,p-35-36.

२५) परमार, पूर्वोक्त, पृ. ६४९.

२६) Motilal Parekh, Reports on the Administration of the Baria state,Ahmedabad, 1927-28,p-3-4.

२७) Ibid., 1927-28, p-9.

२८) Ibid., 1930-31,p-5.

२९) Ibid., 1927-28,p-32.

३०) Ibid., 1931-32,p-39-40.

३१) Ibid., Bombay,1943,p-36.

३२) Ibid., DevgadhBaria, 1942-43,p-41.

३३) Ibid., 1935-36, p-34.

३४) Ibid., 1937-38, p-38.

३५) Ibid., 1941-42,p-40.

३६) Ibid., 1926-27,p-14.

३७) Ibid., 1927-28,p-32.

३८) Ibid., Devgadhbaria,1929-30 p-25.

३९) Ibid., Ahmedabad,1931-32, p-40.

४०) Ibid., 1937-38, p-37.

४१) Ibid.,1938-39, p-36.

४२) Ibid., 1942-43, p-43.

४३) Ibid.,Bombay press,1943, p-37.

४४) पी.जी.कोराट और महेबुब देसाई (संपा.) पश्चिम भारतना देशी राज्यो, पृ.१३०.

४५) Parekh, op .cit., Devgadhbaria,,1935-36 p-34.

४६) Ibid., 1941-42 p-41.

४७) Ibid.,1942-43 p-43.

४८) Ibid., Bombay press,1943, p-36.

४९) परमार, पूर्वोक्त, पृ. ७१५.